कक्षा
12

आजादी के बाद का स्वर्णिम भारत

भाग–2

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

आजादी के बाद का स्वर्णिम भारत

भाग–2

कक्षा 12

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

आजादी के बाद का स्वर्णिम भारत (भाग–2)

कक्षा 12

संयोजक

प्रोफेसर बी. एम. शर्मा
पूर्व अध्यक्ष
राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

लेखकगण

डॉ. कमलेश माथुर
से.नि. सह आचार्य, इतिहास
34, सेन्ट्रल स्कूल स्कीम एयरफोर्स एरिया, जोधपुर

डॉ. सुनीता पचौरी
सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
अजमेर संभाग, अजमेर

डॉ. प्रेम प्रकाश ओला
व्याख्याता, इतिहास
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
गुंगारा, सीकर

डॉ. जीतेन्द्र डी. सोनी
सह आचार्य, भूगोल
राजकीय कला महाविद्यालय
सीकर

प्राक्कथन

राष्ट्र–निर्माण की गांधी–नेहरू विचार–परम्परा में अनेक महत्त्वपूर्ण योगदान के गौरवशाली अध्याय दर्ज हुए, जिससे उनकी महत्ता की निरन्तरता बनी रही। इसी श्रृंखला में लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान जय किसान' का नारा देते हुए भारत–पाक युद्ध में पाकिस्तान को एक जबर्दस्त शिकस्त देकर भारतीय जनमानस के मनोबल में अभूतपूर्व वृद्धि की। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भारतीय लोकतन्त्र को सुदृढ़ कर भारतीयों की सोच में एक नये उत्साह एवं स्वाभिमान का संचार किया। सन् 1971 का भारत–पाक युद्ध, बांग्लादेश का निर्माण तथा 93 हजार सैनिकों द्वारा आत्मसमर्पण, परमाणु परीक्षण, हरित तथा श्वेत क्रान्ति, बैंकों का राष्ट्रीयकरण आदि ऐसी युगान्तकारी घटनायें थी जिन्होंने एक ओर विश्व में भारत का मान बढाया तो दूसरी ओर देश के विकास में चार चाँद लगाये। युवा–हृदय सम्राट राजीव गांधी ने भारतीय समाज का 21वीं सदी के लिए आह्वान कर भारतीय युवाओं की योग्यता एवं क्षमता का आंकलन कर और 'विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी', पर्यावरण–सुरक्षा एवं शासन के विकेन्द्रीकरण पर जोर देकर अपने भविष्यद्रष्टा एवं दूरदर्शी 'विजन' का परिचय दिया।

अपने 'विजन' के साथ देश के विकास को नई ऊँचाइयाँ प्रदान करने में राजीव गांधी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। युवाओं को 18 वर्ष की आयु में मतदान का अधिकार देकर लोकतन्त्र में भागीदार बनाने, राजनीति में शुचिता लाने के लिए दलबदल रोकने जैसे महत्त्वपूर्ण कानून के साथ ही ग्रामीण विकास और पंचायती राज व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए संविधान में संशोधन किए गए। भारत को सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी स्थान दिलाने जैसे बड़े लक्ष्यों को साकार करने में राजीव गांधी का अद्वितीय योगदान रहा है।

राजीव गांधी ने देश की गरीबी, अशिक्षा और पिछड़ेपन से जूझ रहे भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 21वीं सदी में एक विकसित राष्ट्र बनाने की परिकल्पना की। उन्होंने इस आहट को पहचान लिया था कि विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी एवं आधुनिक तकनीकें अपनाकर ही देश के सामने मौजूद चुनौतियों का मुकाबला किया जा सकता है। देश में आधुनिक तकनीक और कम्प्यूटर क्रांति राजीव गांधी की ही देन है। आज दुनिया में भारत को लेकर विकास की जो छवि और नजरिया है उसकी आधारशिला राजीव गांधी ने ही रखी। यह उनके दृढ़ संकल्प और विजन का ही परिणाम है कि भारत आज हर क्षेत्र में मजबूती से खड़ा है।

राजीव गांधी ने भारतीय जनमानस और विशेषकर युवा शक्ति को सम्यक रुप से समझकर कहा कि 21वीं सदी आई.टी. की होगी और भारतीय युवा आई.टी. के क्षेत्र में कमाल दिखा सकते हैं। इसी का परिणाम है कि भारतीय युवा 'आई.टी.' के क्षेत्र में निष्णात एवं उत्कृष्ट हैं और इसी उत्कृष्टता के कारण 'सूचना–प्रौद्यागिकी' के क्षेत्र में भारत दुनिया के विकसित राष्ट्रों में अपना अग्रणी स्थान बनाकर

विश्वगुरुत्व की अपनी पुरानी छवि को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जाग्रत करने की दिशा में अग्रसर है।

राजनीतिक अस्थिरता के छोटे से दौर के बाद नरसिम्हा राव के शासनकाल में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण पर आधारित आर्थिक सुधारों का विमोचन हुआ, जिन्होंने लाइसेंस परमिट राज्य को समाप्त कर दिया।

अटलबिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व काल में द्वितीय 'परमाणु परीक्षण (ऑपरेशन शक्ति)' तथा 'कारगिल युद्ध' ऐसी उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं, जिनसे दुनियां में भारत के वर्चस्व में वृद्धि हुई। इसी प्रकार डॉ. मनमोहन सिंह सरकार द्वारा 'सूचना का अधिकार', 'मनरेगा', 'आधार कार्ड', 'शिक्षा का अधिकार' तथा 'भोजन का अधिकार' ऐसे अनेक उल्लेखनीय कदम उठाये गये जिनसे भारतीय लोकतंत्र को 'पारदर्शी' बनाने में सहायता मिली। शिक्षा के अधिकार से शिक्षा को बढावा मिला तथा मनरेगा से ग्रामीण रोजगार उपलब्ध करवाया जा सका। इसी श्रृंखला में नरेन्द्र मोदी सरकार ने अनेक कदम उठाये जिनमें 'योजना आयोग' के स्थान पर 'नीति आयोग' का गठन, 'स्वच्छ भारत मिशन', 'नोटबन्दी' तथा 'जीएसटी' का उल्लेख किया जा सकता है।

इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक सन् 1965 से आज तक की भारतीय राजनीति की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं उपलब्धियों का ऐसा लेखा–जोखा प्रस्तुत करती है जिस पर प्रत्येक भारतीय को नाज होना स्वाभाविक है। इन प्रवृत्तियों एवं उपलब्धियों का ज्ञान विद्यार्थी जगत के लिए आवश्यक है। आशा है प्रस्तुत पुस्तक अपने इन उदात्त लक्ष्यों के साथ विद्यार्थियों के लिए ज्ञानार्जन हेतु उपयोगी साबित होगी।

संयोजक
प्रोफेसर बी. एम. शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

विषय–सूची

अध्याय–1 **भारत के विकास की यात्रा (सन् 1965 से 1984 तक)** **1–21**
- – इसरो
- – बांग्लादेश का निर्माण
- – प्रथम परमाणु परीक्षण
- – हरित क्रांति एवं श्वेत क्रांति
- – बैंकों का राष्ट्रीयकरण
- – प्रिवी पर्स की समाप्ति

अध्याय–2 **भारत के विकास की यात्रा (सन् 1985 से 2004 तक)** **22–40**
- – चुनाव सुधार–राजनीतिक शुचिता, दल–बदल विरोधी कानून, मताधिकार की आयु सीमा में कमी
- – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 जवाहर नवोदय विद्यालय
- – सूचना एवं संचार क्रांति
- – मण्डल आयोग
- – उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण
- – कावेरी जल विवाद
- – ऑपरेशन शक्ति
- – कारगिल युद्ध

अध्याय–3 **भारत के विकास की यात्रा (सन् 2004 से 2019 तक)** **41–67**
- – सूचना का अधिकार (लोकतंत्र एवं पारदर्शिता)
- – भोजन का अधिकार

– मनरेगा 2005
– भारतीय विशिष्ट पहचान – आधार
– शिक्षा का अधिकार 2009
– योजना आयोग की समाप्ति एवं नीति आयोग गठन
– स्वच्छ भारत मिशन
– नोट बंदी
– वस्तु एवं सेवा कर

अध्याय–4 स्वतंत्र भारत–भूमि सुधार एवं गरीबी उन्मूलन 68–79
– भूमि सुधार
– भूदान आन्दोलन
– गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम

अध्याय–5 भारत की विदेश नीति 80–102
– विदेश नीति के निर्माणक तत्व
– गुट निरपेक्षता की नीति
– भारतीय विदेश नीति की विकास यात्रा
– भारत–विदेश सम्बन्ध, भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध, भारत–चीन सम्बन्ध, भारत–बांग्लादेश सम्बन्ध, भारत–श्रीलंका सम्बन्ध, भारत–नेपाल सम्बन्ध, भारत–अमेरिका सम्बन्ध, भारत सोवियत संघ/रूस सम्बन्ध

संदर्भ ग्रंथ सूची 103